चलूँगा उसी राह पर
जो बाबा ने बताई है।
कभी नहीं गिरूंगा
कसम आज ये खाई है।
मुझको जितना चाहे
अब सहने पड़े सितम।
विकारों को मिटाने में
नहीं करूँगा मैं रहम।
रूप बदल बदलकर
माया चाहे आजमाले।
मुझको हराने के कितने
भी उपाय निकाले।
चल न सकेगी अब
माया की कोई भी चाल।
थामी है मैंने अपने
हाथों में श्रीमत रुपी ढाल।
63 जन्मों में इसी माया
ने किया मुझे कंगाल।
राजयोग के बल से
अब करूँगा इसे निढाल।
पावन बनने से मुझको
ना रोक सकेगी माया।
बाबा से मैंने श्रीमत
का सुरक्षा कवच है पाया।

पावन बनकर मैं अपने
परमधाम को जाऊंगा।
लक्ष्मी पति का पद
मैं ही सतयुग में पाऊंगा।

ॐ शांति